अति प्राचीन इतिहास

पाठ एक

एक सिद्ध संसार

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु

I. प्रस्तावना 1

II. अवलोकन 2

- क. प्रेरणा-स्रोत 2
  - 1. विश्वसनीयता 2
  - 2. बनावट 2
- ख. पृष्ठभूमि 3
  - 1. उपलब्धता 3
  - 2. संपर्क 3
- ग. उद्देश्य 4

III. साहित्यिक संरचना 6

- क. अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार 7
- ख. आदर्श संसार 7
- ग. व्यवस्थित करने के छह दिन 8

IV. वास्तविक अर्थ 10

- क. अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार 10
- ख. आदर्श संसार 12
- ग. व्यवस्थित करने के छह दिन 14
  - 1. मिस्र से छुटकारा 14
  - 2. कनान देश पर अधिकार 15

V. आधुनिक अनुप्रयोग 16

- क. उद्घाटन 17
- ख. निरंतरता 19
- ग. परिपूर्णता 20

VI. निष्कर्ष 22

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

अति प्राचीन इतिहास

पाठ एक

एक सिद्ध संसार

प्रस्तावना

कुछ साल पहले, मैं अपनी कार चला रहा था और मैंने एक ऐसी रेलगाड़ी देखी जो अपनी पटरी से उतर गई थी। और निश्चित रूप से वह वहीं खड़ी थी, कहीं जा नहीं रही थी। जब कोई रेलगाड़ी अपनी पटरी से जिस पर उसे चलना था उतर जाती है, तो वह वहीं खड़ी हो जाती है, और यह एक बड़ी गड़बड़ी है।

खैर, समय की शुरुआत में, परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के लिए अनुसरण करने हेतु एक पटरी, या एक मार्ग बनाया था और यह मार्ग परमेश्वर की सृष्टि को एक भव्य एवं महिमामय भविष्य की ओर ले जाता था। लेकिन अपनी सृष्टि के लिए बनाए परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करने में मानव जाति बार-बार असफल रही है। हमने संसार को पटरी पर से उतार दिया है और हम एक बड़ी गड़बड़ी में फंस गए हैं।

पाठों की इस श्रृंखला में, हम उस मार्ग के बारे में सीखेंगे जिसे परमेश्वर ने संसार के इतिहास के सबसे शुरुआती सालों में निर्धारित किया-जिसे मसीही मंडलियों में हम अकसर "सृष्टि का अध्यादेश" कहते हैं। और हम उत्पत्ति 1-11 की खोज करेंगे, जो कई बार *अति प्राचीन इतिहास* कहलाता है। बाइबल के ये अध्याय उस आश्चर्यजनक मार्ग को देखने में हमारी मदद करते हैं जिसको परमेश्वर चाहता था कि इस्राएल के लोग मूसा की अगवाई में उस पर चलें। और ये अध्याय हमें भी वह मार्ग दिखाते हैं जिसका आज भी उसके लोगों को पालन करना चाहिए।

हमने अपने पहले पाठ की शीर्षक रखा है "एक सिद्ध संसार" क्योंकि हम अपना ध्यान उत्पत्ति 1:1-2:3 पर केंद्रित करेंगे, वह अनुच्छेद जहाँ पर मूसा ने सबसे पहले वर्णन किया था कि परमेश्वर ने संसार को कैसे एक सिद्ध क्रम में आकार दिया जिससे वह अति प्रसन्न था।

जैसा कि हम देखेंगे, यह आदर्श संसार उस भविष्य का पूर्वानुमान या पूर्वाभास कराता था जिस ओर मूसा के दिनों में परमेश्वर इस्राएल को ले गया था-वही भविष्य जिस ओर परमेश्वर अपने लोगों को पूरे इतिहास भर में ले जाता है। यह न केवल हमें यह दिखाता है कि आरंभ में चीज़ें कैसे थीं, लेकिन यह भी कि आज जीवन को कैसा होना चाहिए, और यह कि हमारे युग के अंत में हमारी दुनिया निश्चित रूप से ऐसी ही होगी।

यह पाठ चार भागों में विभाजित होता है: सबसे पहले, हम उत्पत्ति 1-11 के अति प्राचीन इतिहास की रूपरेखा को प्रस्तुत करेंगे। दूसरा, हम अपने ध्यान को उत्पत्ति 1:1-2:3 पर इसकी साहित्यिक संरचना को देखते हुए केंद्रित करेंगे। तीसरा, हम उत्पत्ति की पुस्तक के इस भाग की उसकी संरचना के प्रकाश में जाँच करेंगे। और चौथा, हम इस अनुच्छेद के लिए उचित आधुनिक अनुप्रयोगों की खोज करेंगे। आइए उत्पत्ति 1-11 के संपूर्ण अति प्राचीन इतिहास की रूपरेखा के साथ शुरु करते हैं।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

अवलोकन (रूपरेखा)

उत्पत्ति 1-11 के लिए हमारा दृष्टिकोण पहली नजर में थोड़ा अजीब लग सकता है। इसलिए, हमें अपनी मूल रणनीति को समझाना चाहिए। कम से कम तीन प्रमुख विचार बाइबल के इस भाग पर हमारे अध्ययन का मार्गदर्शन करेंगे: सबसे पहले, इन अध्यायों की प्रेरणा; दूसरा, इन अध्यायों के पीछे की साहित्यिक पृष्ठभूमि; और तीसरा, वह उद्देश्य जिसके लिए इन अध्यायों को लिखा गया था।

सबसे पहले स्थान पर, हम लोग उत्पत्ति 1-11 सहित संपूर्ण पवित्र शास्त्र की ईश्वरीय प्रेरणा के प्रति दृढ़ता के साथ प्रतिबद्ध हैं।

प्रेरणा-स्रोत

प्रेरणा-स्रोत के बारे में हमारी सुसमाचार वाली समझ उत्पत्ति की पुस्तक के इस भाग के बारे में दो अति महत्वपूर्ण विशेषताओं की याद दिलाते हैं: पहला, इसकी विश्वसनीयता, और दूसरा, इसका उद्देश्यपूर्ण डिज़ाइन।

विश्वसनीयता

हम बहुत जोर देकर पुष्टि करते हैं कि बाइबल का यह भाग पूरी रीति से विश्वसनीय है क्योंकि यह परमेश्वर द्वारा प्रेरित है। अब, जब हम बाइबल के इस भाग का अध्ययन करते हैं तो कई ऐतिहासिक मुद्दे सामने आते हैं, और इनमें से कुछ मुद्दों का पूरी रीति से समाधान नहीं किया गया है। लेकिन हमारे उद्देश्यों के लिए यह कहना पर्याप्त होगा कि ईश्वरीय प्रेरणा का तात्पर्य है ऐतिहासिक विश्वसनीयता। मूसा ने अपने मूल पाठकों से चाहा था कि वे उत्पत्ति के इस भाग को ऐतिहासिक सत्य के रूप में प्राप्त करें। अब, जैसा कि संपूर्ण पवित्र शास्त्र के साथ है, हमें इन अनुच्छेदों की सावधानीपूर्वक व्याख्या करनी है ताकि हम उनके ऐतिहासिक पहलूओं को गलत ना समझ बैठें। फिर भी, यह स्पष्ट है कि बाइबल के दूसरे लेखक, और यहाँ तक स्वयं यीशु भी, विश्वास करते थे कि उत्पत्ति 1-11 की कहानियाँ भरोसेमंद इतिहास था। ये पाठ इसी विश्वास पर आधारित होंगे कि ये अध्याय प्राचीन समयों में जो कुछ वास्तव में घटित हुआ था उसके बारे में सच्चे एवं भरोसेमंद अभिलेख हैं।

जबकि हम विश्वास करते हैं कि अति प्राचीन इतिहास भरोसेमंद है, हमें सदैव याद रखना चाहिए कि एक विशेष बनावट के अनुसार इन अध्यायों की विषय-वस्तु को चुनने एवं व्यवस्थित करने के लिए परमेश्वर ने मूसा को प्रेरित किया था।

बनावट

इस बारे में इस तरह से सोचें: उत्पत्ति 1-11 सृष्टि की रचना से लेकर अब्राहम के दिनों तक संसार के इतिहास का विवरण देता है, जो लगभग 2000-1800 ईसा पूर्व के आसपास रहता था। अब हम सब इस बात से सहमत होंगे कि मूसा ने इन ग्यारह छोटे अध्यायों में शामिल घटनाओं की तुलना में उस समय की कई और वैश्विक घटनाओं को छोड़ दिया था। इसलिए, उत्पत्ति 1-11 को समझने के लिए हमें इस चुनाव के साथ-साथ इन अध्यायों की व्यवस्था-क्रम पर भी ध्यान देना चाहिए। जैसा कि हम

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

देखते हैं कि मूसा ने किस तरह से उद्देश्यपूर्ण रीति के साथ, इस अति प्राचीन इतिहास को डिजाइन किया था, हम कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण सवालों का उत्तर दे पायेंगे। इस थोड़ी सी जानकारी को शामिल करने के लिए परमेश्वर ने मूसा को क्यों प्रेरित किया? और परमेश्वर ने क्यों मूसा से इन चुनी हुई सामग्रियों को इस तरह से व्यवस्थित कराया जैसा कि उसने किया है?

इसको समझने के लिए कि मूसा ने क्यों ऐसे लिखा था, हमें सबसे पहले उसके दिनों में अस्तित्व में रहे साहित्यिक परंपराओं की पृष्ठभूमि में झांकना चाहिए।

पृष्ठभूमि

प्राचीन मध्य पूर्व का साहित्य हमारे उद्देश्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, पहली बात क्योंकि अन्य अति प्राचीन अभिलेख मूसा के लिए उपलब्ध थे, और दूसरी बात, क्योंकि मूसा ने वास्तव में अन्य अति प्राचीन अभिलेखों के साथ काम किया था।

उपलब्धता

पुरातत्व अनुसंधान ने दिखाया है कि मूसा सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में लिखने वाला पहला व्यक्ति नहीं था। यह सुनिश्चित है, कि परमेश्वर ने मूसा को प्रेरित किया था, जिसके कारण उसका अभिलेख सत्य है। लेकिन मूसा ने उस समय लिखा जब मध्य पूर्व में कई राष्ट्रों और समूहों ने अति प्राचीन इतिहास के बारे में कई मिथकों एवं महाकाव्यों को पहले ही से लिख लिया था।

इनमें से कुछ प्राचीन लेख काफी प्रसिद्ध हैं। कई लोगों ने *एनुमा एलिश*, या बेबीलोन वाली सृष्टि की कहनी, या *गिलगामिश महाकाव्य* के "टेबलेट इलेवन", या बेबीलोन वाली जल प्रलय की कहानी जैसी लेखों के बारे में सुना होगा। मिस्र और कनान में भी अति प्राचीन इतिहास की कहानियों के संग्रह को लिखा गया था। प्राचीन संसार से ये और कई अन्य दस्तावेज ब्रह्मांड की शुरुआत और आरंभिक इतिहास के बारे में बाते करते हैं।

और न सिर्फ यह, बल्कि इनमें से कई मध्य पूर्व के अभिलेख मूसा के लिए उसकी जवानी में उपलब्ध थे। मिस्र देश के शाही राजमहलों में मूसा को पढ़ाया गया था, और उसके लेख दर्शाते हैं कि वह प्राचीन संसार के साहित्य को जानता था। जब मूसा ने अपने अति प्राचीन काल के परमेश्वर द्वारा प्रेरित और सच्चे अभिलेख को लिखा, तो वह प्राचीन मध्य पूर्व के अन्य साहित्यिक परंपराओं से अच्छी तरह से वाकिफ था।

यह जानते हुए कि अन्य अति प्राचीन अभिलेख मूसा के लिए उपलब्ध थे, अब हम दूसरे प्रश्न को पूछने की स्थिति में हैं: अन्य संस्कृतियों के मिथकों एवं महाकाव्यों के साथ मूसा ने कैसे कार्य (संपर्क) किया था?

संपर्क

जैसा कि हम पाठों की इस पूरी श्रृंखला में देखेंगे, मूसा ने नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों रूपों से अन्य अति प्राचीन परंपराओं के साथ संपर्क किया था।

एक ओर, मूसा ने सच्चाई के साथ झूठ का सामना करने के लिए आरंभिक समयों के अपने इतिहास को लिखा था। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि मूसा की अगवाई में चल रहे इस्राएलियों को सभी तरह के मूर्तिपूजक प्रभाव के अधीन किया गया था। उन्हें विश्वास करने के लिए परखा गया था कि यह संसार कई देवताओं के प्रयासों और संघर्षों के परिणाम से पैदा हुआ था। उन्होंने या तो अपने कुल-पिताओं के सच्चे विश्वास को त्याग दिया था, या इस सच्चाई में उन्होंने अन्य देशों के धार्मिक विश्वासों को मिला दिया था। कई मायनों में, मूसा ने परमेश्वर के लोगों को जो बातें वास्तव में हुई थीं उसे सिखाने के लिए अति प्राचीन समयों के अपने वृतांत को लिखा। उसने दूसरे धर्मों के झूठ के खिलाफ़ यहोवावाद के सत्य को स्थापित करने की कोशिश की।

इसके साथ ही, मूसा ने अपने समय की साहित्यिक परंपराओं के साथ सकारात्मक रीति से संपर्क बनाने के द्वारा झूठे मिथकों का खण्डन करने के इस नकारात्मक उद्देश्य को पूरा किया था। उसके अभिलेख उद्देश्यपूर्ण तरीके से मध्य पूर्व के अन्य अभिलेखों से मेल खाते थे ताकि वह परमेश्वर की सच्चाई को उन तरीकों से बता सके जिनसे इस्राएली लोग समझ सकते थे। हालांकि मूसा के लेख और कई महत्वपूर्ण ग्रंथों के बीच कई समानताएं हैं, हाल के पुरातत्व अनुसंधान ने एक विशेष साहित्यिक परंपरा के साथ एक आश्चर्यजनक समानता की ओर इशारा किया है।

1969 में *एट्राहसिस: द बेबीलोनियन स्टोरी ऑफ द फ्लड* शीर्षक के तहत एक महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ था। अब हम इस बात की पुष्टि नहीं कर सकते कि इस लेख की परंपरा कितने समय पुरानी है, लेकिन हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक कहानी में कई टुकड़ों को एक साथ लेकर आता है जिन्हें पहले केवल अलग-अलग रूप में जाना जाता था।

एट्राहसिस महाकाव्य एक बुनियादी त्रिविध संरचना का पालन करता है: यह मानव जाति की रचना के साथ शुरु होता है। मानव जाति की रचना के बाद आरंभिक मानव इतिहास का अभिलेख है जो कि मानव जाति के कारण संसार की भ्रष्टता पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करता है, जल प्रलय वाले न्याय और संसार की एक नई व्यवस्था के साथ इस भ्रष्टता को सुधारा जाता है।

एट्राहसिस के साथ उत्पत्ति की पुस्तक की तुलना करने पर दृढ़ता से इस विचार को समर्थन मिलता है कि मूसा ने एक योजनाबद्ध व्यापक संरचना के साथ अपने अभिलेख को लिखा था। पहली नज़र में, उत्पत्ति 1 से 11 अनुच्छेदों का एक टूटा हुआ संग्रह जो एक विषय से दूसरे तक बिना किसी निरंतरता के जाता हुआ जैसा प्रतीत हो सकता है, लेकिन *एट्राहसिस* के साथ व्यापक साहित्यिक समानांतरता पर सिर्फ ध्यान मात्र हमारी यह देखने में मदद करता है कि मूसा का अति प्राचीन इतिहास एक व्यापक संरचना के साथ एक कहानी के रूप में एक साथ बंधा हुआ है।

उत्पत्ति 1 -11 तीन भागों में विभाजित होता है: पहला, 1:1-2:3 में आदर्श सृष्टि; दूसरा उत्पत्ति 2:4-6:8 में मानव पाप के कारण संसार का भ्रष्ट होना; और अंत में, उत्पत्ति 6:9-11:9 में जल प्रलय और नई व्यवस्था।

अब हम तीसरा प्रश्न पूछने की स्थिति में हैं: मूसा ने उत्पत्ति 1-11 क्यों लिखा? वह किस बात को अपने इस्राएली पाठकों को बताने का इरादा रखता था?

उद्देश्य

एक बहुत ही बुनियादी स्तर पर, हम लोग सुनिश्चित हो सकते हैं कि मूसा इस्राएल को अतीत के बारे में सच्चाई बताना चाहता था। वह चाहता था कि वे जान जायें कि उनके परमेश्वर ने विश्व

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

इतिहास के आरंभिक वर्षों में क्या किया था। जिस तरह अन्य देशों की मिथकों का उद्देश्य उन मिथकों के दृष्टिकोणों के प्रति लोगों को कायल करना था, उसी तरह मूसा ने इस्राएलियों के विश्वास की ऐतिहासिक सच्चाई के प्रति उन्हें कायल करने की कोशिश की।

लेकिन करीब से जाँचने पर, हम मूसा के अति प्राचीन इतिहास के पीछे एक अतिरिक्त उद्देश्य को देखने जा रहे हैं। विशेष रूप से, उसने इसलिए भी लिखा ताकि परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनने के लिए इस्राएल के लोगों को प्रभावित किया जा सके। अब, ये अतिरिक्त उद्देश्य एकदम से हर किसी को जो उत्पत्ति 1-11 पढ़ता है स्पष्ट नहीं होता है, लेकिन यह तब स्पष्ट हो जाता है जब हम महसूस करते हैं कि अन्य अति प्राचीन लेख भी इसी उद्देश्य को बताते हैं।

इससे पहले कि हम लोग प्राचीन संसार के प्राचीन लेखों के उद्देश्यों को समझ सकें, हमें यह समझना होगा कि कई मध्य पूर्व की संस्कृतियाँ यह विश्वास करती थी कि इस ब्रह्मांड को अलौकिक स्वर्गीय ज्ञान के अनुसार बनाया एवं आकार दिया गया है। अपनी आदर्श अवस्था में, यह ब्रह्मांड इस ज्ञान या ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार कार्य करता था। और सम्राट से लेकर दास तक, समाज में प्रत्येक व्यक्ति की यह जिम्मेदारी थी, कि जितना संभव हो सके इस ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार अनुकूल बने।

अब प्राचीन मध्य पूर्व में अति प्राचीन मिथकों और महाकाव्यों के साथ इस बात का क्या संबंध है? इस्राएल के आसपास की संस्कृतियों के पास अति प्राचीन अभिलेख थे जो समय की शुरुआत के दौरान वाली घटनाओं के बारे में बताते थे। उन्होंने ऐसा उन संरचनाओं को समझाने के लिए किया, जिन्हें संसार में प्राचीन समयों में देवताओं ने बनाए थे। अति प्राचीन कालों की उनकी परंपराएं केवल आरंभिक विश्व इतिहास से ही संबंध नहीं रखती थीं। अपने वर्तमान धार्मिक एवं सामाजिक प्रणाली को न्यायसंगत बनाने के लिए उन्होंने अपने प्राचीन अभिलेखों को लिखा था। इन ग्रंथों के लेखकों ने, जो अकसर पुजारी लोग हुआ करते थे, उन तरीकों की ओर इशारा किया जिनमें देवताओं ने संसार को मूल रूप से व्यवस्थित किया था ताकि यह दिखाया जा सके कि उनके अपने दिन में चीज़ों को कैसा होना चाहिए। कभी-कभी, वे विशेष रूप से धार्मिक बातों जैसे कि मंदिरों, और पुजारियों, और अनुष्ठानों पर ही ध्यान-केंद्रित करते थे। देवताओं द्वारा किस मंदिर को चुना गया था, और कौन से पुजारी वाले परिवार ने सेवा करनी थी? अन्य समयों पर, वे व्यापक सामाजिक संरचनाओं जैसे राजनीतिक शक्ति और कानून से मतलब रखते थे। राजा किसे बनना है? कुछ लोग गुलाम क्यों हैं? उनके मिथकों ने लोगों को देवताओं के सृष्टि वाले अध्यादेशों के अनुरूप बनने के लिए बुलाया, अर्थात ब्रह्मांड के लिए देवताओं द्वारा निर्धारित संरचनाओं के अनुरूप।

जैसा कि हम इन पाठों में देखेंगे, मूसा ने उत्पत्ति 1-11 को इन्हीं जैसे कारणों के लिए लिखा था। एक ओर, मूसा ने उन तरीकों पर एक स्पष्ट ध्यान-केंद्रण के साथ अपने अति प्राचीन इतिहास को लिखा था, जिनमें यहोवा ने प्राचीन काल में संसार को सृजा एवं व्यवस्थित किया था। सृष्टि की रचना से लेकर बाबुल की मीनार तक, मूसा ने जिस तरीके से जो चीज़ें बहुत पहले घटी थी उस बारे में बताया। फिर भी, उसने ऐसा सिर्फ ऐतिहासिक रुचि के लिए नहीं किया था। जैसे-जैसे मूसा ने मिस्र से प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर इस्राएलियों की अगवाई की, उसने कई विरोधियों का सामना किया जो विश्वास करते थे कि उसने वास्तव में इस्राएलियों को गुमराह किया था। और इस विरोध के जवाब में, यह अति प्राचीन इतिहास दिखाता था कि इस्राएल के लिए मूसा की नीतियाँ और लक्ष्य ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर के डिज़ाइन के प्रति सत्य थे। परिणामस्वरूप, मूसा की योजना का विरोध करना परमेश्वर के अध्यादेश का विरोध करना था।

उत्पत्ति 1:1-2:3 में आदर्श सृष्टि के अपने लेख में, मूसा ने दिखाया कि कनान देश की ओर जाने के द्वारा इस्राएल वास्तव में परमेश्वर के आदर्श की ओर बढ़ रहा था। 2:4-6:8 में संसार की भ्रष्टता के

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

अपने अभिलेख में, मूसा ने दिखाया कि मिस्र एक भ्रष्टाचार और कठिनाई का स्थान था, जो पाप के ऊपर परमेश्वर के अभिशाप के कारण था। अंत में, उत्पत्ति 6:9-11:9 में जल प्रलय और उसके परिणामस्वरूप नई व्यवस्था के अपने अभिलेख में, मूसा ने इस्राएलियों को दिखाया कि वह उन्हें कई आशीषों के साथ नई व्यवस्था की ओर ले जा रहा था, जैसे उससे पहले संसार के लिए नूह नई व्यवस्था और कई आशीषों को लाया था। ये अति प्राचीन तथ्य इस्राएल के भविष्य के लिए मूसा के दर्शन को पूरी रीति से उचित ठहराते थे। यदि वह इस्राएल को इन सत्यों के लिए कायल कर पाता है, तो इस्राएलियों में विश्वासयोग्य लोग मिस्र से दूर हो जायेंगे और कनान देश को अपने ईश्वरीय विरासत के रूप में अपना लेंगे।

अब जबकि हमने उत्पत्ति 1-11 अध्यायों के अति प्राचीन इतिहास के प्रति अपने सामान्य दृष्टिकोण को प्रस्तुत कर दिया है, हम उत्पत्ति की पुस्तक के पहले भाग को बारीकी से देखने की स्थिति में हैं: उत्पत्ति 1:1-2:3 में वर्णित परमेश्वर का आदर्श संसार।

साहित्यिक संरचना

अधिकांश ईवैन्जैलिकल मसीही लोग जब बाइबल के पहले अध्याय के बारे में सोचते हैं, तो वे उन सभी विवादों के बारे में सोचते हैं जो इसकी व्याख्या से संबंधित हैं। क्या परमेश्वर ने छह सामान्य दिनों में सृष्टि की रचना की? उत्पत्ति 1 के "दिन" क्या एक लम्बे युग या समय थे? या उत्पत्ति 1 परमेश्वर की रचनात्मक गतिविधि जैसी बहुत कुछ एक कविता, गैर-ऐतिहासिक यादगारी है? इन सभी दृष्टिकोणों को ईवैन्जैलिकल मसीहों के बीच स्वीकार किया जाता है। हालांकि मेरा अपना विचार है कि उत्पत्ति 1 सिखाती है कि परमेश्वर ने सृष्टि को जैसा कि आज हम जानते हैं छह सामान्य दिनों में बनाया था, बाइबल पर विश्वास करने वाले सभी मसीही लोग इस विचार को नहीं मानते हैं।

जब हम इन पाठों में उत्पत्ति के इन शुरुआती अध्यायों की ओर बढ़ते हैं, तो हमारी चिंता इन जैसे ऐतिहासिक मुद्दों के साथ इतनी ज्यादा नहीं है। हम लोगों का मतलब साहित्यिक प्रश्नों से ज्यादा है। हम इस बात में ज्यादा रुचि रखते हैं कि मूसा ने इस अध्याय को कैसे और क्यों लिखा था। इस अनुच्छेद में कौन सी साहित्यिक संरचनाएं प्रतीत होते हैं? और मूसा के उद्देश्य को समझने में ये संरचनाएं हमारी मदद कैसे करते है?

हमें यह ध्यान में रखकर शुरु करना चाहिए कि इस अनुच्छेद के तीन प्रमुख चरण हैं, अर्थात, एक शुरुआत का, एक बीच का, और एक अंत का।

मूसा की सृष्टि वाली कहानी 1:1-2 के साथ शुरु होती है। इन पदों की विषय-वस्तु को हम "अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार" के रूप में सारांशित कर सकते हैं। अध्याय 1:3-31 इस विषय-वस्तु के बीच वाले भाग को बनाता है जिसमें "छह दिन में सृष्टि की रचना" का विवरण है या जिसे हम कहेंगे सृष्टि को "व्यवस्थित करने के छह दिन।" अंत में, 2:1-3 में सब्त का दिन है, या जैसा कि हम उसे कहेंगे, एक "आदर्श संसार।"

इस पाठ में, अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार से शुरु करके हम इस संरचना के सभी तीन भागों की खोज करेंगे। दूसरा, हम आखिरी भाग की जाँच करेंगे जो एक आदर्श संसार से संबंध रखता है। और अंत में, हम व्यवस्थित करने के छह दिनों की खोज करेंगे। आइए पहले उत्पत्ति 1:1-2 के अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार की ओर देखते हैं।

अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार

उत्पत्ति 1 के पहले भाग को देखने पर, हम पृथ्वी को ढकने वाली अव्यवस्था और परमेश्वर की आत्मा के बीच एक बहुत ही महत्वपूर्ण नाटकीय तनाव को देखते हैं।

पद 1 में शीर्षक देने के द्वारा और पद 2 में संसार की शुरुआती दशा का वर्णन करने के द्वारा, 1:1-2 की शुरुआत एक मंच को स्थापित करती है। जिस तरह मूसा ने इसे 1:2 बताया है उसे सुनिए:

> **पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था (उत्पत्ति 1:2)।**

यह पद इस पूरे अध्याय में पाये जाने वाले नाटकीय तनाव का परिचय देती है। इस तनाव की एक ओर, पृथ्वी "बेडौल और सुनसान" पड़ी है, या जैसा कि इब्रानी भाषा में कहा गया है, *टोहू वाबोहू* (תֹהוּ וָבֹהוּ)। ये वाला इब्रानी वाक्य बाइबल में पर्याप्त रूप से बार-बार नहीं आता है इसलिए हमारे लिए सटिकता से यह जानना कि इसका क्या अर्थ है मुश्किल है। लेकिन कई विद्वानों का मानना है कि पृथ्वी निवास करने लायक नहीं थी, मानव जीवन के प्रतिकूल थी, बहुत कुछ रेगिस्तान या बयाबान के जैसी मानव जीवन के पनपने लायक नहीं थी। इसलिए, इस पद की शुरुआत में, हम देखते हैं कि रहने न लायक, अंधकारपूर्ण, आदिम, अव्यवस्थित गहरे जल ने पूरी पृथ्वी को ढक रखा है।

नाटकीय तनाव में दूसरा तत्व भी 1:2 में ही दिखाई देता है। मूसा ने लिखा कि "परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।" जो इब्रानी शब्द यहाँ पर इस्तेमाल किया गया वह है *मेरखेफेत* (מְרַחֶפֶת) जिसका अर्थ है "ऊपर उड़ना" या "ऊपर मण्डराना।"

इस तरह हम इस अनुच्छेद की शुरुआत में एक बहुत ही नाटकीय दृश्य को देखते हैं। एक ओर हम पृथ्वी पर अव्यवस्था को देखते हैं। उसके जवाब में, परमेश्वर पृथ्वी को ढकने वाली अव्यवस्था को दूर करने हेतु कार्यवाही करने के लिए तैयार था। इस प्रारंभिक नाटकीय तनाव ने कई प्रश्नों को जन्म दिया है: परमेश्वर का आत्मा क्या करेगा? अव्यवस्था का क्या होगा?

शुरुआती पदों के इस प्रारंभिक नाटकीय तनाव को ध्यान में रख कर, अब हम मूसा के सृष्टि वाले अभिलेख के अंतिम भाग में इस तनाव के समाधान की ओर देखने की स्थिति में हैं: उत्पत्ति 2:1-3 में आदर्श संसार।

आदर्श संसार

इस भाग को बहुत ही साधारण तरीके से बनाया गया है। यह 2:1 में एक सारांश के साथ शुरु होता है कि परमेश्वर ने अपने रचनात्मक कार्य को पूरा कर लिया है, और 2:2-3 में परमेश्वर के विश्राम के साथ समाप्त होता है। उत्पत्ति 2:2-3 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया, और उसने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया। और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; (उत्पत्ति 2:2-3)।

जब मूसा ने परमेश्वर को सब्त के विश्राम की स्थिति में प्रवेश करने, उस दिन को विशेष आशीष देने और उसे पवित्र ठहराने के रूप में वर्णित किया, तो उसने घोषित किया था कि अव्यवस्था और परमेश्वर के मण्डराने वाले आत्मा के बीच वाले तनाव का समाधान हो गया है। परमेश्वर ने अंधकार को आधीन कर लिया था, अव्यवस्थित गहरे जल के ऊपर प्रभुत्व जमा लिया था, और अपने आदर्श रूप से व्यवस्थित संसार में वह प्रसन्न था। सृष्टि की रचना की कहानी ब्रह्मांड के सिद्ध समन्वय में होने के इस सुखद शांतिपूर्ण दर्शन के साथ समाप्त होती है।

अब जबकि हमने देख लिया है कि सृष्टि की रचना वाला मूसा का अभिलेख किस तरह से शुरु एवं समाप्त होता है, हमें इस अनुच्छेद के बीच वाले भाग को देखना चाहिए जो विवरण देता है कि कैसे अव्यवस्थित संसार और परमेश्वर के मण्डराने वाले आत्मा के बीच वाले तनाव का समाधान हुआ था।

व्यवस्थित करने के छह दिन

यह अनुच्छेद सिखाता है कि 1:3-31 में वर्णित छह दिन की अद्भुत योजना के अनुसार संसार को व्यवस्थित करने के द्वारा परमेश्वर ने अव्यवस्था को काबू में किया था। इस विषय-वस्तु का मुख्य फोकस तब स्पष्ट हो जाता है जब हम देखते हैं कि मूसा ने एक वाक्यांश के साथ कार्यों को बार-बार प्रस्तुत किया था, "फिर परमेश्वर ने कहा।" ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर इस विषय-वस्तु का प्रमुख किरदार है, और उसका शक्तिशाली वचन इन पदों का फोकस है।

परमेश्वर का वचन मात्र ही संसार के लिए शानदार व्यवस्था को लेकर आया था। अन्य संस्कृतियों के कई पौराणिक देवताओं के विपरीत, इस्राएल के परमेश्वर ने जब वह सृष्टि की रचना करता है तो वह न किसी संघर्ष का और न किसी युद्ध का सामना करता है। उसने सिर्फ बोला, और संसार ने अपने उचित व्यवस्था को अपना लिया। इसके अलावा, परमेश्वर के बोले गए वचनों ने उसके शक्तिशाली ज्ञान को प्रदर्शित किया था। परमेश्वर ने संसार को ऐसा व्यवस्थित किया जो उसे सबसे अच्छा लगा था।

कई टीकाकारों ने पहचाना है कि सृष्टि की रचना वाली परमेश्वर की व्यवस्था करने वाले दिन तीन के दो समूहों में आते हैं: दिन 1 से दिन 3 तक और दिन 4 से 6 तक। दिनों के इन दो समूहों के बीच वाले संबंधों को कई तरीकों से वर्णित किया गया है, और आपसी संबंध बहुसंख्या में हैं।

इन प्रतिरूपों से स्वयं का परिचय कराने का एक मददगार तरीका है कि उत्पत्ति 1:2 में पृथ्वी के विवरण से निष्कर्ष निकाला जाए। आपको याद होगा कि मूसा ने कहा था कि पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी था, *टोहू वाबोहू* (תֹהוּ וָבֹהוּ)। तीन दिनों के दो समूहों के महत्व को समझाने के लिए इन शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है।

एक ओर, पहले तीन दिनों के दौरान, परमेश्वर ने इस तथ्य के साथ कार्य किया कि पृथ्वी "बेडौल" पड़ी थी। कहने का तात्पर्य है, एक क्षेत्र को दूसरे से अलग करने और अपनी सृष्टि के भीतर अधिकार क्षेत्रों को आकार देने के द्वारा परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को रूप दिया। दूसरी ओर, अंतिम तीन दिनों के दौरान, परमेश्वर ने इस तथ्य के साथ कार्य किया कि अव्यवस्थित पृथ्वी "सुनसान" या "खाली"

पड़ी थी। परमेश्वर का समाधान था कि उसके द्वारा बनाए गए विभिन्न अधिकार क्षेत्रों में निवासियों को भरना।

पहले तीन दिनों के बारे में सोचें। पहले दिन, परमेश्वर ने दिन के अधिकार क्षेत्र को रात से अलग किया था। इससे पहले कि वहां सूर्य होता, परमेश्वर ने अंधकारपूर्ण, अव्यवस्थित संसार के अंधेरे में उजियाले को चमकाया था।

दूसरे दिन में, परमेश्वर ने पृथ्वी के ऊपर एक गोल गुंबद, या आकाश को बनाकर नीचे वाले जल के क्षेत्र को और ऊपर वाले जल को अलग किया था। इस ईश्वरीय कार्य ने हमारे ग्रह के लिए जिसे हम वायुमंडल कहते हैं उसे पैदा किया था, यानी पृथ्वी पर के जल को ऊपर आकाश की नमी से अलग करना।

तीसरे दिन, परमेश्वर ने सूखी भूमि के क्षेत्र को समुद्र से अलग किया था। महासागरों को पृथ्वी के क्षेत्रों में जमा किया गया था, और भूमि प्रकट हुई थी। सूखी भूमि पर वनस्पति बढ़ने लगी। इस तरह पहले तीन दिनों में, परमेश्वर ने बेडौल संसार को रूप दिया। उसने उजियाले और अंधकार के अधिकार क्षेत्रों को, ऊपर के जल और नीचे के जल को अलग करने वाले आकाश को, और पृथ्वी पर शुष्क भूमि को स्थापित किया।

मूसा के अभिलेख के अनुसार, एक बार जब परमेश्वर ने पहले तीन दिनों के दौरान अधिकार क्षेत्रों को बनाने के द्वारा पृथ्वी के बेडौलपन के साथ कार्य कर लिया था, तो उसने अंतिम तीन दिनों में इन अधिकार क्षेत्रों में निवासियों को रखने के द्वारा फिर पृथ्वी के खालीपन के साथ कार्य किया।

चौथे दिन परमेश्वर ने उजियाले और अंधियारे के क्षेत्रों को भरने के लिए जिन्हें उसने पहले दिन में बनाया था आकाश में सूर्य, चंद्रमा, और सितारों को रखा। इन आकाशीय निकायों को दिन और रात पर प्रभुता करने और उन्हें अलग रखने के लिए आकाश में रखा गया था।

पाँचवें दिन, परमेश्वर ने वायुमंडल में पक्षियों और समुद्रों में समुद्री जीवों को रखा था। इन निवासियों ने ऊपर और नीचे वाले जल के क्षेत्रों को भरा था जिन्हें दूसरे दिन बनाया गया था।

अंत में, छठे दिन परमेश्वर ने सूखी भूमि पर जानवरों और मानव जाति को रखा। इन निवासियों ने सूखी भूमि के क्षेत्र को भरा था जिसे परमेश्वर ने तीसरे दिन समुद्र में से बाहर निकाला था।

मूसा ने सारी सृष्टि को इन क्षेत्रों और उनके निवासियों में एकत्र किया। एक शब्द में, परमेश्वर ने अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार में शानदार व्यवस्था लाने में छह दिनों का उपयोग किया। उसका कार्य इतना अद्‌भुत था कि छह बार परमेश्वर ने कहा:

"कि अच्छा है" (उत्पत्ति 1:4, 10, 12, 18, 21, 25)

और जब उसने मानव जाति को सूखी भूमि पर रहने के लिए बनाया, तो उसने कहा:

"कि वह बहुत ही अच्छा है" (उत्पत्ति 1:31)

मूसा ने एकदम स्पष्ट कर दिया कि परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था उससे वह अद्‌भुत रीति से प्रसन्न था।

इस तरह हम देखते हैं कि उत्पत्ति 1:1-2:3 में एक बहुत ही उद्देश्यपूर्ण, जटिल संरचना है। यह अनुच्छेद संसार में अव्यवस्था और उसके ऊपर परमेश्वर के मण्डराने के साथ शुरु होता है। छह दिनों तक परमेश्वर ने अव्यवस्थित संसार में व्यवस्था को बोला था। इसके फलस्वरूप, सातवें दिन परमेश्वर

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

उस आदर्श व्यवस्था से प्रसन्न हुआ, जो वह संसार में लाया था, और उसने अपने सब्त के विश्राम का आनंद लिया।

अब जबकि हमने उत्पत्ति 1:1-2:3 के बड़े साहित्यिक संरचना को देख लिया है, तो हम यह देखने की स्थिति में हैं कि इस अनुच्छेद के वास्तविक अर्थ को कैसे व्यक्त किया जाता है।

वास्तविक अर्थ

हमने पहले ही देख लिया है कि बड़े पैमाने पर मूसा के अति प्राचीन इतिहास का उद्देश्य इस्राएल के निर्गमन और विजय को यह दिखाने के द्वारा सत्यापित करना था, कि इस्राएली लोग उस व्यवस्था के कितने अनुरूप हैं जिसे परमेश्वर ने संसार के शुरुआती इतिहास में स्थापित किया था। लेकिन इस सामान्य उद्देश्य ने किस तरह से अपने आप को 1:1-2:3 की विशेष कहानी में प्रकट किया है? किस तरह मूसा ने इस्राएल के लिए अपनी सेवा को सृष्टि की कहानी के साथ जोड़ा?

एक बार फिर उत्पत्ति 1:1-2:3 के तीन प्रमुख भागों को देखने के द्वारा हम पता लगायेंगे कि मूसा ने ऐसा कैसे किया था। पहले, हम अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार को देखेंगे। फिर हम आदर्श रूप से व्यवस्थित संसार के आखिरी भाग की ओर मुड़ेंगे। और अंत में, हम इस अनुच्छेद के बीच वाले भाग को देखेंगे जहाँ परमेश्वर संसार को व्यवस्थित करता है। आइए पहले 1:1-2 को देखें, अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार।

अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार

हमारे उद्देश्यों के लिए, उत्पत्ति की पुस्तक के पहले दो पदों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता पद 2 में बताया गया नाटकीय तनाव है। जिस तरीके से मूसा ने अव्यवस्थित संसार और पवित्र आत्मा के बीच नाटकीय तनाव का वर्णन किया है उससे स्पष्ट हो गया कि वह न सिर्फ सृष्टि की रचना के बारे में लिख रहा था, परन्तु वह इस्राएल के निर्गमन के बारे में भी लिख रहा था।

एक ओर, आपको याद होगा कि उत्पत्ति 1:2 में मूसा ने पृथ्वी को "बेडौल" या *टोहू* के रूप में वर्णित किया है। दूसरी ओर, उसने परमेश्वर की आत्मा का वर्णन "मण्डराने" या इब्रानी में, *मेरखेफेत* के रूप में किया है।

इस दृश्य का महत्व तब स्पष्ट हो जाता है जब हम उस अनुच्छेद की ओर देखते हैं जिसमें मूसा ने उत्पत्ति के इस नाटकीय तस्वीर का इशारा दिया है। व्यवस्थाविवरण 32:10-12 में मूसा इस्राएल के निर्गमन और सृष्टि की रचना वाली घटना के बीच संबंध पर विशेष ध्यान आकृषित करने के लिए उत्पत्ति 1:2 की शब्दावली का प्रयोग करता है।

> **उसने उसको जंगल में, और सुनसान और गरजनेवालों से भरी हुई मरुभूमि में पाया; उसने उसके चारों ओर रहकर उसकी रक्षा की, और अपनी आँख की पुतली के समान उसकी सुधि रखी। जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर ऊपर मण्डलाता है, वैसे ही उसने अपने पंख फैलाकर उसको अपने परों पर उठा**

लिया। यहोवा अकेला ही उसकी अगुवाई करता रहा, और उसके संग कोई पराया देवता न था। (व्यवस्थाविवरण 32:10-12)

ये पद महत्वपूर्ण हैं क्योंकि सिर्फ ये ही वह अन्य स्थान है जहाँ पर मूसा ने अपने सारे लेखों में "बेडौल" और "मण्डलाता" वाले शब्दों का उपयोग किया।

पद 10 में, जिस शब्द का अनुवाद "मरुभूमि" किया गया है वह इब्रानी शब्द *टोहू* है जो कि उत्पत्ति 1:2 में "बेडौल" के रूप में दिखाई देता है। इसके साथ, पद 11 में, जिस शब्द का अनुवाद "मण्डलाता" किया गया है वह *मेरखेफेत* है, वही शब्द जिसका उपयोग उत्पत्ति 1:2 में किया गया है जब परमेश्वर का आत्मा गहरे जल के ऊपर "मण्डराता" है।

मूसा ने उत्पत्ति 1 के साथ दृढ़ता से इसे जोड़ने के लिए इन दोनों शब्दों को व्यवस्थाविवरण 32 में एक साथ रखा। लेकिन इन शब्दों के उपयोग मात्र से इस संबंध को कैसे बनाया गया था?। व्यवस्थाविवरण 32 में "मरुभूमि" और "मण्डलाता" शब्दों के क्या अर्थ थे?

पहले स्थान पर, मूसा ने "मरुभूमि" शब्द को मिस्र के लिए प्रयोग किया था। 32:10 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

उसने उसको जंगल में, और सुनसान और गरजनेवालों से भरी हुई मरुभूमि में पाया; उसने उसके चारों ओर रहकर उसकी रक्षा की, और अपनी आँख की पुतली के समान उसकी सुधि रखी। (व्यवस्थाविवरण 32:10)

दूसरे स्थान पर, जब मूसा इस्राएल देश को प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जा रहा था तो इस्राएल के साथ परमेश्वर की उपस्थिति, संभवतः बादल और आग के खंबे के लिए उसने "मण्डलाता" शब्द का प्रयोग किया। 32:10-11 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

उसने उसके चारों ओर रहकर उसकी रक्षा की, और अपनी आँख की पुतली के समान उसकी सुधि रखी। जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर ऊपर मण्डलाता है, वैसे ही उसने अपने पंख फैलाकर उसको अपने परों पर उठा लिया। (व्यवस्थाविवरण 32:10-11)

कई मायनों में, हम व्यवस्थाविवरण 32:10-12 को उत्पत्ति 1:2 में अपने स्वयं के कार्य पर मूसा की व्याख्या के रूप में समझ सकते हैं। यह हमें उसके उद्देश्य में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जब वह उत्पत्ति के पहले अध्याय को लिख रहा था।

व्यवस्थाविवरण 32 हमारी यह समझने में मदद करता है कि मूसा ने सृष्टि की रचना और मिस्र से इस्राएल के छुटकारे के बीच समानांतर परिस्थिति को देखा। मूसा ने लिखा कि सृष्टि की रचना और मिस्र से इस्राएल के छुटकारे दोनों में अव्यवस्थित, निर्जन मरुभूमि शामिल थे। उसने यह भी लिखा कि मण्डलाने के द्वारा वास्तविक अव्यवस्थित संसार में परमेश्वर प्रवेश करता है, बहुत कुछ वैसे ही जैसे वह इस्राएल के ऊपर मण्डलाता है जब उसने उन्हें मिस्र से छुटकारा दिया।

सृष्टि की रचना और निर्गमन के बीच इन समानांतरताओं से, हम देख सकते हैं कि मूसा ने अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार के बारे में इस्राएल को सृष्टि के बारे में बताने मात्र के लिए ही नहीं

लिखा था; उसने सृष्टि की रचना में परमेश्वर के कार्य को एक आदिरूप, एक नमूने, या एक रूपावली के रूप में भी पेश किया था, जो बताता था कि उसके दिनों में इस्राएल देश के लिए परमेश्वर क्या कार्य कर रहा था। जब मूसा ने सृष्टि की रचना में परमेश्वर के मूल कार्य को लिखा, तो उसने अपने पाठकों को यह दिखाने के लिए ऐसा किया कि उन्होंने मिस्र से निकलकर उसके पीछे चलने में कोई गलती नहीं की थी। इसके विपरीत, सृष्टि की रचना का लेख साबित करता था कि मिस्र से उनका छुटकारा परमेश्वर का एक शक्तिशाली कार्य था। इस्राएल को मिस्र की अव्यवस्था से छुटकारा देने के द्वारा परमेश्वर संसार को फिर से व्यवस्थित कर रहा था, जैसा कि उसने शुरुआत में किया था। परमेश्वर अब इस्राएल के ऊपर मण्डरा रहा था जैसे वह शुरुआत में पृथ्वी के ऊपर मण्डरा रहा था। गलती होने के बजाय, मिस्र से निर्गमन एक ऐसा कार्य था जिसमें संसार के लिए अपनी इच्छा के अनुसार व्यवस्था वापस लाने के लिए परमेश्वर कार्यरत था। सारांश में, मिस्र से इस्राएल का छुटकारा सृष्टि की पुनः-रचना से कम नहीं था।

उत्पत्ति 1 अध्याय की शुरुआत और इस्राएल के निर्गमन वाले अनुभव के बीच समानांतरता को ध्यान में रखकर, जब हम अंतिम भाग को देखते हैं तो हम इस दृष्टिकोण की पुष्टि को देख सकते हैं, अर्थात 2:1-3 में आदर्श रूप से व्यवस्थित संसार।

आदर्श संसार

आपको याद होगा कि सृष्टि की कहानी परमेश्वर के विश्राम में जाने के साथ समाप्त होती है। उत्पत्ति 2:2-3 में विश्राम के लिए इब्रानी शब्द है *शबत* (שָׁבַת), या जैसा कि हम इसे कहते हैं, "सब्त।" और यह शब्दावली एक अन्य तरीके से सृष्टि की कहानी को इस्राएल के निर्गमन से जोड़ती है।

मूसा और इस्राएली लोग *शबत* शब्द को मुख्यतः उन सब्त के अनुष्ठानों की ओर इशारा करते हुए प्रयोग करते थे जिनका आनंद वे मूसा की व्यवस्था के अनुसार उठायेंगे। वास्तव में, निर्गमन 20 में दस आज्ञाओं के सूचीबद्ध होने में, मूसा ने समझाया कि इस्राएल को सब्त का पालन करना था क्योंकि उत्पत्ति 2 में परमेश्वर ने ऐसा किया था।

> **तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना ...क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उनमें हैं, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; (निर्गमन 20:8-11)**

जब इस्राएल ने उत्पत्ति की पुस्तक में सुना कि परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम किया, तो उन्होंने और कुछ नहीं बल्कि उत्पत्ति की कहानी को स्वयं अपने सब्त के अनुष्ठानों और दस आज्ञाओं के साथ जोड़ा।

हालांकि इस्राएलियों ने जंगल में सब्त का कुछ हद तक पालन किया था, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि सब्त की आराधना का पूर्ण परिमाण केवल प्रतिज्ञा किए हुए देश में ही हो सकता था। जैसा कि हम निर्गमन 20:8-11 में पाते हैं, इस्राएलियों को साप्ताहिक सब्त का पालन करना था। लेकिन उन्हें अन्य पवित्र दिनों या सब्तों को भी मानना था। उदाहरण के लिए, लैव्यवस्था 25 से हम सीखते हैं कि उन्हें भूमि को बिना हल जोते खाली छोड़कर प्रत्येक सातवें वर्ष को भी सब्त वर्ष के रूप में मानना था। इस्राएल को प्रत्येक पचासवें वर्ष को महान जुबली वर्ष करके मानना था जब सभी ऋणों को माफ कर दिया जाता था और सभी परिवारों को अपने वास्तविक विरासत वाली भूमि में लौटना

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

था। मूसा की व्यवस्था में, सब्त के अनुष्ठान में परमेश्वर की पूर्ण आराधना जंगल के बीच घूमते हुए इस्राएलियों द्वारा देखी गई किसी भी अन्य अनुष्ठान से कहीं अधिक जटिल थी।

क्योंकि सब्त का पूर्ण पालन तभी हो सकता था जब इस्राएली लोग उस देश में प्रवेश करते है, इसलिए मूसा ने इब्रानी शब्दों *नूअख* (נוּחַ) या *मेनूखा* (מְנֻחָה) का प्रयोग करते हुए जो कि *शबत* (सब्त) के साथ निकटता से जुड़े हैं, बार-बार कनान को "विश्राम," या "विश्राम का स्थान" करके संबोधित किया था। कई स्थानों पर, मूसा ने प्रतिज्ञा किए हुए देश को इस्राएल के विश्राम स्थान के रूप में वर्णित किया जहाँ पर इस्राएल राष्ट्र अंततः उस पूर्ण आराधना का पालन करेगा जिसकी आज्ञा परमेश्वर की व्यवस्था में दी गई थी। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 12:10-11 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> **परन्तु जब तुम यरदन पार जाकर उस देश में जिसके भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें करता है बस जाओ, और वह तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से तुम्हें विश्राम दे, और तुम निडर रहने पाओ, तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम - का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसी में तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेंटें; और मन्नतों की सब उत्तम उत्तम वस्तुएँ जो तुम यहोवा के लिये संकल्प करोगे, अर्थात् जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूँ उन सभों को वहीं ले जाया करना (व्यवस्थाविवरण 12:10-11)।**

इस अनुच्छेद में हम देखते हैं कि सब्त का पूर्ण पालन – परमेश्वर की आराधना – तभी संभव हो पायेगा जब इस्राएल विश्राम के देश में प्रवेश कर लेगा।

मूसा के लिए, सब्त व्यक्तियों और परिवारों द्वारा एक दिन को मौन आराधना के लिए अलग रखने से बड़ कर था। सब्त विश्राम के देश में मूसा के दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण आयाम था, अर्थात जहाँ परमेश्वर अपने नाम को स्थापित करेगा उस विशेष स्थान पर आराधना करना एवं उत्सव मनाना। यही कारण है कि परमेश्वर ने भजन संहिता 95:11 में उन लोगों के बारे में इस तरीके से बोला जिन्हें कनान देश में प्रवेश करने से रोका गया था:

> **इस कारण मैंने क्रोध में आकर शपथ खाई कि ये मेरे विश्रामस्थान में कभी प्रवेश न करने पाएँगे। (भजन 95:11)**

प्रतिज्ञा किए हुए देश में सब्त और पूर्ण राष्ट्रीय आराधना के बीच यह करीबी संबंध बताता है कि क्यों मूसा ने परमेश्वर के सब्त विश्राम में जाने के साथ सृष्टि की अपनी कहानी का अंत किया। मूसा इस्राएलियों को बता रहा था कि जैसे परमेश्वर पृथ्वी को अव्यवस्था से सब्त तक ले गया, उसी तरह वह इस्राएल को मिस्र की अव्यवस्था से प्रतिज्ञा किए हुए देश में सब्त के लक्ष्य की ओर ले जा रहा था।.मूसा इस्राएल को विश्राम के स्थान, यानी कनान देश की ओर ले जा रहा था। और जो लोग मूसा की योजना का विरोध कर रहे थे वे केवल मानवीय योजना का ही विरोध नहीं कर रहे थे। वे वास्तव में ब्रह्मांड के आदर्श संरचनाओं के अनुरूप अपने लोगों को लाने के लिए परमेश्वर की कोशिशों का विरोध कर रहे थे। मिस्र को छोड़ना और प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करना ब्रह्मांड के लिए परमेश्वर की सिद्ध योजना के साथ काम करने से कम नहीं था।

अब जबकि हम देख चुके हैं कि किस रीति से अव्यवस्थित शुरुआत और सब्त वाले अंत की सृष्टि की कहानी ने मूसा के माध्यम से इस्राएल के लिए जो कार्य परमेश्वर कर रहा था उसके मूल स्वभाव को समझाया है, अब हमें उत्पत्ति 1:3-31 में व्यवस्थित करने वाले दिनों के बीच वाले भाग के कुछ तथ्यों पर संक्षेप में देखना चाहिए। मूसा ने सृष्टि की रचना के दिनों को अपनी सेवकाई से कैसे जोड़ा था?

व्यवस्थित करने के छह दिन

सृष्टि के दिनों और इस्राएल के निर्गमन के बीच कई संबंध हैं, लेकिन हम इनमें से सिर्फ दो को ही देखेंगे: पहला, मिस्र से छुटकारे के साथ संबंध, और दूसरा, प्रतिज्ञा किए हुए देश पर अधिकार जमाने का लक्ष्य।

मिस्र से छुटकारा

पहले स्थान पर, इस्राएल को मिस्र से छुटकारा देने में, परमेश्वर ने उसी तरह की शक्ति का प्रदर्शन किया था जैसा उसने उत्पत्ति 1 में सृष्टि को व्यवस्थित करने में दिखाया थी। तस्वीर की एक ओर, परमेश्वर ने मिस्रियों पर विपत्तियों को भेजने के द्वारा, सृष्टि के समय स्थापित व्यवस्था को उलटा कर दिया। उदाहरण के लिए, जैसे शुरुआत में पानी को जीवन से भरपूर होने के बजाय, मिस्र का पानी घातक बन गया और मछलियाँ मर गई जब परमेश्वर ने पानी को खून में बदल दिया था। जैसा परमेश्वर ने शुरुआत में ठहराया था कि मनुष्यों को जीवित प्राणियों के ऊपर अधिकार रखना था, इसके बजाय, मिस्र के ऊपर मेंढकों, डाँसों, कीड़ों और टिड्डियों का राज हो गया। सृष्टि के समय प्रकाश और अंधकार के विभाजन को पलट दिया गया जब दिन के दौरान ही मिस्र के देश को अंधकार ने ढक लिया था। और भूमि को वनस्पति उपजाने की बजाय, ओलों, आग और टिड्डियों ने मिस्र की सारी फसलों को नष्ट कर दिया। फलदायी और पृथ्वी में भर जाने के बजाय, मिस्री जानवर और लोग दोनों ही बहुत संख्या में मर गए। इन और कई अन्य तरीकों में, मिस्र पर श्रापों ने उस व्यवस्था को उलट दिया जिसे परमेश्वर ने उत्पत्ति 1 के छह दिनों में स्थापित किया था। विपत्तियों के दौरान, मिस्र देश वास्तव में आदिकाल की अव्यवस्था की ओर लौट गया था। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मूसा ने उसे बेडौल, बंजर मरुभूमि कह कर, इस्राएल से वह स्थान छोड़ने का आह्वान किया था।

कोई भी इस्राएली व्यक्ति जो यह विश्वास करता था कि मिस्र में जीवन अच्छा था उसे मूसा की सृष्टि वाली कहानी पर विचार करना होता था। मिस्र में उनका अनुभव उस तरीके से एकदम विपरीत था जिसमें मिस्री लोग स्वयं अपने देश के बारे में सोचा करते थे। मिस्री लोग विश्वास करते थे कि वह देश देवताओं द्वारा आशीषित था और कुछ हद तक कम से कम कुछ इस्राएली लोग भी इस बात पर विश्वास करते थे। लेकिन मूसा ने स्पष्ट कर दिया कि मिस्र देश परमेश्वर के आदर्श रूप से व्यवस्थित संसार के विपरीत बन गया था।

जबकि मिस्र के साथ यह विरोधाभास एकदम स्पष्ट है, सृष्टि के छह दिनों का मिस्र से छुटकारे के साथ एक सकारात्मक समानता भी है। जबकि मिस्रियों ने अपने देश को आदिकाल की अव्यवस्था की ओर लौटते देखा, इस्राएलियों ने उन तरीकों से परमेश्वर को अपने पक्ष में संसार को व्यवस्थित करते देखा जो कि सृष्टि के छह दिनों से मेल खाता था। उनका पानी ताजा और जीवन देने वाला बना रहा। उनके स्थानों में मेंढकों और टिड्डियों का राज नहीं था। उन्होंने प्रकाश का आनंद उठाया जबकि मिस्री

लोगों को अंधेरे में पीड़ित होना पड़ा। इस्राएलियों के खेत उपजाऊ बने रहे। उनके जानवर सुरक्षित थे, और इस्राएली लोग जब वे मिस्र में थे बहुत बढ़ते गए।

और इससे भी अधिक, सृष्टि के ऊपर अपने नियंत्रण के आश्चर्यजनक, नाटकीय प्रदर्शन में, परमेश्वर ने लाल समुद्र को रोक कर रखा और इस्राएलियों के सामने सूखी भूमि को प्रगट किया, ठीक वैसे ही जैसे सृष्टि के तीसरे दिन वह प्रगट हुई थी। इस्राएल की ओर से परमेश्वर द्वारा किए गए प्राकृतिक आश्चर्यक्रम अभूतपूर्व नहीं थे। कई तरीकों में, वे उन तरीकों की याद दिलाते थे जिनमें परमेश्वर ने उत्पत्ति 1 के दिनों में संसार को व्यवस्थित किया था।

उत्पत्ति 1 में जिस तरीके से परमेश्वर ने पृथ्वी को व्यवस्थित किया था और जिस तरीके से उसने इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाया था, इनके बीच समानताओं ने मूसा के पाठकों को दिखाया कि उनकी ओर से किया गया परमेश्वर का कार्य, सृष्टि के उसके कार्य के समानांतर था। मिस्र से उनके निर्गमन में, परमेश्वर ने संसार को फिर से आकार दिया जैसा कि उसने शुरुआत में किया था।

मिस्र से छुटकारा न केवल सृष्टि के दिनों की याद दिलाता था, बल्कि शुरुआत में जिस व्यवस्था को परमेश्वर ने स्थापित किया था वह उसी तरीके से कनान देश में जीवन की अपेक्षा करता था।

कनान देश पर अधिकार

जब इस्राएल प्रतिज्ञा किए हुए देश में पहुँचा, तो प्रकृति उपाजऊपन और आनंद के साथ उचित रीति से व्यवस्थित की जायेगी। इसी कारण से, परमेश्वर ने कनान को दूध और शहद की धाराओं वाला देश कहा था। इसके अलाव, प्रतिज्ञा किए हुए देश में, इस्राएली लोग परमेश्वर के स्वरूप का स्थान ग्रहण करेंगे जैसा कि उसे छठवें दिन में स्थापित किया गया था।

विशेष रूप से ध्यान दें कि उत्पत्ति 1:28 में, परमेश्वर ने मानव जाति से कहा:

> **"फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।" (उत्पत्ति 1:28)**

हालांकि इस्राएल ने मिस्र में भी, इस आशीष का कुछ अनुभव किया था, यह कनान देश ही था जहाँ पर परमेश्वर इस सम्मान को इस्राएल को और अधिक मात्रा में देगा। मूसा के नेतृत्व में, इस्राएली लोग उस स्थान के मार्ग पर थे जहाँ सृष्टि में वे इस आदर्श पदवी को पूर्ण करेंगे। उस बात को लैव्यवस्था 26:9 में सुनिए जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी कि इस्राएल के देश में विश्वासयोग्य इस्राएलियों के साथ क्या होगा:

> **और मैं तुम्हारी ओर कृपा दृष्टि रखूँगा और तुम को फलवन्त करूँगा और बढ़ाऊँगा, और तुम्हारे संग अपनी वाचा को पूर्ण करूँगा। (लैव्यवस्था 26:9)**

यहाँ पर उत्पत्ति 1:28 की ओर एकदम साफ संकेत है। परमेश्वर ने उत्पत्ति 1:28 में कहा था, "फूलो फलो और पृथ्वी में भर जाओ।" लैव्यवस्था 26:9 में वह कहता है कि वह उन्हें फलवन्त करेगा और देश में उनकी संख्या को बढ़ायेगा।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

कनान देश उस अद्भुत संसार के समान होगा जिसे परमेश्वर ने शुरुआत में व्यवस्थित किया था। कनान स्वाभाविक सद्भाव का स्थान होगा जहाँ पर परमेश्वर का स्वरूप इस पृथ्वी पर अपनी वास्तविक भूमिका को पूरा करने में सक्षम होगा।

हमने केवल कुछ ही उन तरीकों को देखा है जिनमें सृष्टि के छह दिन मूसा के दिनों में इस्राएल के अनुभव से संबंध बनाते हैं। लेकिन इस नमूने से हम देखते हैं कि परमेश्वर ने जिस तरीके से ब्रह्मांड को व्यवस्थित किया, इस बारे में मूसा का यह अभिलेख कि समय की शुरुआत में क्या घटित हुआ था सिर्फ एक लेख ही नहीं था। उसने सृष्टि के छह दिनों का वर्णन उन तरीकों से किया जो उसके इस्राएली पाठकों को उनके अपने जीवनों जो घटित हो रहा था उसे स्पष्ट रूप से देखने में मदद करता था। जिस तरह परमेश्वर प्रकृति को विशेष तरीकों से व्यवस्थित कर ब्रह्मांड को अव्यवस्था से सब्त की ओर ले गया, उसी तरह इस्राएलियों के लिए संसार को फिर से व्यवस्थित करने के द्वारा परमेश्वर इस्राएल को मिस्र की अव्यवस्था से कनान में सब्त विश्राम की ओर ले जा रहा था।

जब इस्राएलियों ने मूसा को ब्रह्मांड की सृष्टि के बारे में बताते हुए सुना तो हम केवल इस्राएलियों की प्रतिक्रिया की कल्पना कर सकते हैं। उन्होंने एहसास किया होगा कि जो कुछ उनके साथ हो रहा था वह कोई दुर्घटना नहीं थी। उन्हें मिस्र से छुटकारा देने और कनान देश ले जाने के द्वारा, परमेश्वर संसार में कार्य कर रहा था जैसे उसने शुरुआत में ब्रह्मांड को आदर्श व्यवस्था में लाने के लिए किया था। इस्राएल का छुटकारा एक पुनः-सृष्टि थी, और उन्हें उस पुनः-सृष्टि के बड़े और बड़े अनुभवों में मूसा का पालन करना था।

अब जबकि हमने उत्पत्ति 1:1-2:3 के वास्तविक अर्थ को देख लिया है, हमें अपने अंतिम विषय की ओर जाना चाहिए, यानी सृष्टि की कहानी का आधुनिक अनुप्रयोग। इस अनुच्छेद को लागू करने में, हम उन तरीकों का ध्यान से पालन करेंगे जिनमें नए नियम ने इस अनुच्छेद के विषयों को विस्तार से समझाया है।

आधुनिक अनुप्रयोग

नए नियम के लेखक, संसार की परमेश्वर द्वारा सृष्टि के बारे में उन्हें बताने के लिए उत्पत्ति 1 पर बहुत ज्यादा निर्भर थे। उन्होंने हर वह संकेत दिया कि वे मूसा की कहानी की विश्वसनीयता पर विश्वास करते थे। फिर भी, यह तथ्य चाहे जितना भी महत्वपूर्ण हो, नए नियम के लेखकों ने साथ में मूसा के प्रमुख उद्देश्य को भी विस्तार से समझाया है जैसा कि हमने इस पाठ में यहाँ पर रेखांकित किया है।

जिस तरह से मूसा ने मिस्र से इस्राएल के छुटकारे को सृष्टि के आदिरूप के समान देखा, उसी तरह से नया नियम उत्पत्ति 1:1-2:3 को इससे भी बड़े छुटकारे के आदिरूप के समान देखता है-वह छुटकारा (उद्धार) जो मसीह में मिलता है। नया नियम सिखाता है कि छुटकारे और न्याय के सभी अनुभव जिन्हें इस्राएल ने पुराने नियम के दिनों में देखा था वे उस महान और अंतिम दिन का पूर्वानुमान करते थे जब परमेश्वर अपने पुत्र के द्वारा छुटकारा और न्याय लेकर आयेगा। इस विश्वास ने नए नियम के लेखकों की सृष्टि की मूसा वाली कहानी के बारे में मसीह पर विशेष ध्यान देते हुए विचार करने में अगवाई की। जिस रीति से इस्राएल को सृष्टि के दृष्टिकोण से अपने स्वयं के निर्गमन को देखना था, नए नियम के लेखकों ने सृष्टि के दृष्टिकोण में मसीह की ओर देखा।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

जब कभी भी हम मसीह के छुटकारे वाले कार्य पर नए नियम की शिक्षा की खोज करते हैं, तो हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि नए नियम के लेखक मानते थे कि मसीह संसार के लिए छुटकारा एक ही समय में एकदम से नहीं लाया था। इसके विपरीत, वे विश्वास करते थे कि मसीह संसार के लिए छुटकारा और न्याय अपने राज्य के तीन आपस में जुड़े चरणों में लेकर आया।

पहले स्थान पर, जब मसीह पहली बार पृथ्वी पर आया तो उसने अपने लोगों के उद्धार के लिए बहुत कुछ हासिल किया था। मसीह के पहले आगमन की इस अवधि को हम लोग, राज्य का उद्घाटन कह सकते हैं। नया नियम मसीह के जीवन, उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान, और स्वर्गारोहण, साथ में पिन्तेकुस्त और प्रेरितों की बुनियादी सेवकाई को मसीह के महान छुटकारे की शुरुआत के रूप में देखता है।

दूसरे स्थान पर, नए नियम के लेखक समझ गए थे कि मसीह का राज्य अब भी निरंतर जारी है जब उसने इस संसार को छोड़ दिया है। इस समय के दौरान, सुसमाचार के प्रचार करने के द्वारा परमेश्वर का उद्धार देने वाला अनुग्रह संसार में फैल रहा है। प्रेरितों के बाद और मसीह की वापसी तक के संपूर्ण इतिहास में मसीह में उद्धार की निरंतरता शामिल है।

तीसरे स्थान पर, नया नियम सिखाता है कि राज्य की परिपूर्णता के समय जब मसीह महिमा में वापस आयेगा, तो उद्धार अपनी संपन्नता में हो कर आयेगा। हम लोग दुष्टता के ऊपर उसके विजय को देखेंगे, मसीह में जो सोए हैं वे जी उठेंगे, और हम उसके साथ संसार के ऊपर राज करेंगे। मसीह के पहले आगमन के समय उद्धार शुरु हुआ और आज जारी है, वह परिपूर्णता में जब वह वापस आयेगा तो पूरा होगा।

मसीह के राज्य के ये तीन चरण उन तरीकों को समझने के लिए बहुत जरूरी हैं जिनमें नए नियम के लेखकों ने मूसा की सृष्टि वाली कहानी को विस्तार से समझाया, इसलिए हमें प्रत्येक को अलग-अलग करके देखना चाहिए। मूसा द्वारा इस्राएल को लिखने के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, नए नियम के लेखकों ने उत्पत्ति की सृष्टि वाली कहानी को मसीह के राज्य के उद्घाटन, निरंतरता, और परिपूर्णता में मसीह के उद्धार पर लागू किया। आइए सबसे पहले उन तरीकों की ओर देखते हैं जिनमें नया नियम उत्पत्ति के पहले अध्याय को राज्य के उद्घाटन से जोड़ता है।

उद्घाटन

मसीह के राज्य के उद्घाटन की व्याख्या करने के लिए नया नियम किस रीति से सृष्टि को एक चश्मे (लैंस) के रूप में इस्तेमाल करता है? खैर, कई मौकों पर नया नियम मसीह के पहले आगमन को परमेश्वर की पुनः-सृष्टि, यानी ब्रह्मांड को फिर से आकार देने वाले रूप में बयान करता है। सबसे पहले यूहन्ना रचित सुसमाचार के शुरुआती शब्दों पर विचार करें। यूहन्ना 1:1-3 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> **आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। (यूहन्ना 1:1-3)**

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

ध्यान दें कि यूहन्ना का सुसमाचार कैसे शुरु होता है, "आदि में।" हम सभी जानते हैं कि ये शब्द उत्पत्ति 1:1 के शुरुआती शब्दों से निकल कर आते हैं जहाँ मूसा ने लिखा:

> **आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:1)**

शुरुआत से ही, यूहन्ना अपने पाठकों को उत्पत्ति में सृष्टि वाली कहानी के ढाँचे में रखता है। फिर यूहन्ना आगे कहता है कि मसीह त्रीएक परमेश्वर का व्यक्ति है जिसने सब वस्तुओं की रचना की; वह परमेश्वर का वचन है, जो सृष्टि के समय बोला गया था, जिसके द्वारा संसार को पहली बार रचा गया था।

हालांकि ये पद सृष्टि की कहानी के स्पष्ट संदर्भ के साथ शुरु होते हैं, लेकिन जैसे-जैसे हम यूहन्ना 1 में आगे पढ़ना जारी रखते हैं, हम पाते हैं कि यूहन्ना योजनाबद्ध तरीके से उत्पत्ति से हटकर घटनाओं के दूसरे समूह की ओर जाता है जो सृष्टि वाली कहानी के समानांतर थी। अगले पदों यानी यूहन्ना 1:4-5 में जो उसने लिखा उसे सुनिए:

> **उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया। (यूहन्ना 1:4-5)**

इस बिंदु पर यूहन्ना उत्पत्ति के विषयों पर निष्कर्षों को निकालना जारी रखता है, विशेषकर प्रकाश का विषय को जिसको परमेश्वर अंधकारपूर्ण अव्यवस्थित संसार में पहले दिन लाया। फिर भी, उत्पत्ति के प्रकाश के रूप में यीशु की बात करने की बजाय, यूहन्ना ने मसीह के देहधारण को पाप के कारण संसार के अंधकार में चमकने वाले प्रकाश के रूप में इंगित किया। सृष्टि से हटकर मसीह के आगमन पर जाने के द्वारा, यूहन्ना ने उजागर किया था कि मसीह में संसार के पापमय अंधकार के विरूद्ध चमकने के द्वारा, परमेश्वर संसार की अव्यवस्था के विरूद्ध चला, ठीक वैसे ही जैसे उसने शुरुआत में किया था।

इसी के जैसा विषय 2 कुरिन्थियों 4:6 में दिखाई देता है। वहाँ पौलुस ने अपनी सेवकाई की महिमा की कुछ इस रीति से व्याख्या की है:

> **इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, "अन्धकार में से ज्योति चमके," और वही हमारे हृदयों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो। (2 कुरिन्थियों 4:6)**

यहाँ पर पौलुस ने प्रत्यक्ष रूप से इन शब्दों में उत्पत्ति 1 की ओर इशारा किया, "परमेश्वर ...कहा 'अंधकार में से ज्योति चमके।'" उसने पहले ज्योति के प्रकट होने के साथ सृष्टि के मूल क्रम पर ध्यान आकृषित किया, लेकिन फिर वह सृष्टि की कहानी के महत्वपूर्ण समानांतर पर ध्यान आकृषित करता है- परमेश्वर ने "अपनी ज्योति को हमारे हृदयों में चमकाई है" जब "परमेश्वर की महिमा" "यीशु मसीह के चेहरे" में दिखाई दी थी।

प्रेरित ने कहा कि मसीह के राज्य का उद्घाटन-यानी वह समय जब मसीह का चेहरा पृथ्वी पर दिखाई दिया जा सकता था-इसको सबसे अच्छी तरीके से तब समझा गया जब इसे परमेश्वर के मूल रचनात्मक कार्य के आदिरूप से संबंधित किया गया था। शुरुआत में ज्योति के प्रकट होने में जिस महिमा को परमेश्वर ने दिखाया था वही महिमा अंधकार के संसार में मसीह के पहले आगमन के समय भी उजागर की गई थी।

इन दोनों अनुच्छेदों से हम मूसा की सृष्टि वाली कहानी के मसीही दृष्टिकोण में एक आवश्यक तथ्य को पाते हैं। मसीह के अनुयायी उत्पत्ति 1 में एक तस्वीर को पाते हैं, एक पूर्वानुमान को, जिसे परमेश्वर ने मसीह के पहले आगमन, यानी राज्य के उद्घाटन में किया था।

कई मायनों में, आप और मैं भी उन्हीं तरह की परीक्षाओं का सामना करते हैं जिनका कि मूसा के पीछे चलने वाले इस्राएलियों ने किया था। जब मसीह पहली बार इस संसार में आया, तो परमेश्वर ने कुछ अद्भुत कार्य किया था, ठीक वैसे ही जब उसने इस्राएल को मिस्र देश से छुड़ाया था। फिर भी, हम अकसर यह देखने में असफल रहते हैं कि वास्तव में 2000 साल पहले मसीह में परमेश्वर कार्य कितना महान था। एक अंजान मनुष्य के दृष्टिकोण से, मसीह का जीवन कोई महत्व का नहीं लगता। इसको बड़े आसानी से उस समय में घटित हुई कई महत्वहीन घटनाओं में से एक सोच कर नजरंदाज किया जा सकता है। जब हम मसीह के बारे में इस प्रकार से सोचने की परीक्षा में पड़ते हैं, तो हमें नए नियम के दृष्टिकोण को याद करना चाहिए। पृथ्वी पर मसीह का प्रकटीकरण परमेश्वर द्वारा अंतिम बार इस संसार को पुनः-व्यवस्थित करने की शुरुआत थी। परमेश्वर संसार को पाप और मृत्यु के अव्यवस्थित अंधकार से छुटकारा दे रहा था। यीशु का पहला आगमन उस प्रक्रिया को शुरु करता है जिसमें परमेश्वर अपनी सृष्टि को अपने और अपने स्वरूप के लिए सदा महिमा में वास करने हेतु अद्भुत, अनंत काल तक जीवन देने वाला स्थान बनाएगा। हम मसीह पर, और केवल उसी पर अपना विश्वास रखने में एकदम सही हैं।

अभी तक, हमने देखा कि मसीह के पहले आगमन के महत्व को समझाने के लिए नया नियम सृष्टि की कहानी का उपयोग करता है। अब हम देख सकते हैं कि नया नियम राज्य की निरंतरता को, यानी मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच की अवधि को भी पुनः-सृष्टि के रूप में मानता है।

निरंतरता

2 कुरिन्थियों 5:17 एक ऐसा प्रसिद्ध अनुच्छेद है जो इस दृष्टिकोण को समझाता है:

> **इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं। (2 कुरिन्थियों 5:17)**

किंग जेम्स संस्करण इस पद का यह कहते हुए अनुवाद करता है कि जब कोई व्यक्ति मसीह में होता है, तो वह "नया प्राणी" बन जाता है। यह अनुवाद दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि यह उत्पत्ति 1 की सृष्टि वाली कहानी के लिए पौलुस के इशारे को व्यक्त नहीं करती है। यहाँ यूनानी शब्द *क्टीसिस* (κτίσις), जिसका सही अनुवाद "सृष्टि" है (जैसा कि ज्यादातर आधुनिक अनुवादों में है), न कि "प्राणी।" वास्तव में, अनुच्छेद के इस भाग का मूल रूप से अनुवाद ऐसा किया जा सकता है, "एक नई सृष्टि है।" पौलुस का तात्पर्य ऐसा प्रतीत होता है कि जब लोग उद्धार वाले विश्वास में मसीह के पास आते हैं, तो वे एक नए राज्य, एक नए संसार, एक नई सृष्टि का हिस्सा बन जाते हैं।

इस प्रकाश में हम देखते हैं कि राज्य की निरंतरता के दौरान जब पुरुष एवं महिलाएं मसीह पर अपना विश्वास लाते हैं तो वे नई सृष्टि का अनुभव करते हैं। इस अर्थ में, जो कुछ उन लोगों के साथ होता है जो मसीह को सुनते, विश्वास लाते और उसका अनुसरण करते हैं, उसे सही तरीके से समझने के

लिए सृष्टि की उत्पत्ति वाली कहानी एक जरिया बनती है। जब हम परमेश्वर की नई सृष्टि का हिस्सा बनते हैं, तो हम संसार के लिए परमेश्वर के आदर्श व्यवस्था के आश्चर्य का आनंद लेना शुरु कर देते हैं।

इस कारण से, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि पौलुस, व्यक्ति के उद्धार की प्रक्रिया को दूसरे तरीके से भी समझाता है जो कि मूसा की सृष्टि वाली कहानी से निकलता है। कुलुस्सियों 3:9-10 में हम इस वचनों को पढ़ते हैं:

> **क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है, जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है। (कुलुस्सियों 3:9-10)।**

इस अनुच्छेद में, प्रेरित ने समझाया है कि उत्पत्ति 1 के संदर्भ में मसीह के अनुयायियों के साथ क्या घटित होता है। हम लोग "[अपने] सृजनहार के स्वरूप में...नए बनते जाते हैं।" बेशक, पौलुस ने उत्पत्ति 1:27 की ओर इशारा किया है जहाँ मूसा ने कहा था कि परमेश्वर के आदर्श संसार में आदम और हव्वा शामिल थे जो "परमेश्वर के स्वरूप में" सृजे गए थे। मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान, हम पाते हैं कि हम लोग परमेश्वर के स्वरूप के समान अपने पहले माता-पिता की स्थिति को वापस पाने की आजीवन प्रक्रिया में लगातार "नए बनाए" जा रहे हैं।

ये दो अनुच्छेद दिखाते हैं कि मसीह के कार्य को समझने के लिए नया नियम न केवल राज्य के उद्घाटन में, बल्कि इसकी निरंतरता में भी मूसा की सृष्टि वाली कहानी को एक मानक के रूप में इस्तेमाल करता है।

बेशक, नए नियम के लेखक मूसा की सृष्टि वाली कहानी के विषयों को एक अंतिम चरण में ले जाते हैं। न सिर्फ उन्होंने मसीह के पहले आगमन को एक नई सृष्टि की शुरुआत के रूप में देखा, और राज्य की निरंतरता को ऐसे समय के रूप में जब व्यक्ति अपने जीवन में नई सृष्टि के प्रभावों का आनंद लेता है, लेकिन उन्होंने सृष्टि के विषयों को मसीह के कार्य के अंतिम चरणों पर भी लागू किया-यानी राज्य की परिपूर्णता पर।

परिपूर्णता

नए नियम में कम से कम दो अनुच्छेद इस संबंध में स्पष्ट नज़र आते हैं। पहला, इब्रानियों 4 मूसा की सृष्टि वाली कहानी के संदर्भ में मसीह की वापसी की ओर इशारा करता है:

> **क्योंकि सातवें दिन के विषय में उसने कहीं यों कहा है, "परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों को निपटा करके विश्राम किया।"... अत: जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिये सब्त का विश्राम बाकी है; क्योंकि जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर के समान अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया है। अत: हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ... (इब्रानियों 4:4-11)।**

जिस तरह मूसा ने उत्पत्ति 2 में परमेश्वर के सब्त वाले दिन का उपयोग इस्राएल को कनान देश, यानी विश्राम वाले देश को जाने के लिए प्रेरित करने हेतु किया था, उसी तरह इब्रानियों के लेखक ने परमेश्वर के सब्त दिन को परम छुटकारे के आदर्श आदिरूप के समान देखा जिसका अनुभव हम तब करेंगे जब मसीह वापस आयेगा। जिस तरह से परमेश्वर ने शुरुआत में संसार को आदर्श रूप से व्यवस्थित किया और सब्त के आनंद को लेकर आया था, उसी तरह जब मसीह महिमा में वापस आयेगा, तो वह संसार को पुनः-व्यवस्थित करेगा और अपने लोगों को अंतिम सब्त विश्राम का आनंद देगा। जब हम इस दिन की इंतजार में हैं, हम से कहा गया है कि हमें "उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करना" चाहिए, जो मसीह के लौटने पर आएगा।

अंत में, प्रकाशितवाक्य 21:1 ऐसा सबसे शानदार पद है जो मूसा की सृष्टि वाली कहानी के संदर्भ में मसीह के दूसरे आगमन की पहचान करता है। यूहन्ना ने जिस तरीके से सृष्टि वाले विषयों को मसीह की वापसी पर लागू किया उसे सुनें:

> **फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। (प्रकाशितवाक्य 21:1)**

यूहन्ना ने "एक नए आकाश और एक नई पृथ्वी" की बात की, और यह वाक्यांश उत्पत्ति 1:1 को याद करता है जिसमें लिखा गया है कि परमेश्वर ने "आकाश और पृथ्वी" की सृष्टि की। इसके अलावा, यूहन्ना ने कहा कि इस नई पृथ्वी पर अब "समुद्र भी न रहा।" आपको याद होगा कि उत्पत्ति 1:9 में परमेश्वर ने समुद्र को रोका था, इसे इसकी सीमा में रखा ताकि सूखी भूमि दिखाई दे सके और मानव जाति के लिए एक सुरक्षित आवास बन सके। नए संसार में, मसीह की वापसी के बाद, हम पायेंगे कि नमक वाले समुद्रों को पूरी तरह से पृथ्वी पर से हटा दिया जाएगा और इसे ताजे जीवन देने वाले जल के साथ प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा। मसीह का कार्य उत्पत्ति 1 में सृष्टि के दिनों के समान है, लेकिन मसीह में परमेश्वर और आगे बढ़कर कार्य करेगा, यानी आदर्श व्यवस्था को परिपूर्णता में लाने के लिए बहुत बढ़कर कार्य करेगा। संपूर्ण ब्रह्मांड को नए आकाश और नई पृथ्वी में पुनः-सृजा जायेगा, और परमेश्वर एवं उसके लोग उस नए संसार का एक साथ आनंद लेंगे।

दुर्भाग्यवश, मसीही लोग अकसर अपनी अनंत आशा को सृष्टि से अलग करते हैं। हम अनुमान लगाते हैं कि हम अपने अनंत काल को स्वर्ग पर एक आत्मिक संसार में बिताएंगे। लेकिन नया नियम इस बारे में एकदम स्पष्ट है। हमारी अंतिम मंजिल सृष्टि के सातवें दिन ठहराए गए सब्त के लिए लौटना है। हम लोग अनंत काल को नए आकाश और नई पृथ्वी पर बिताएंगे। मूसा के दिनों में यही आशा इस्राएलियों की थी, और आज हमारी आशा भी यही है।

जब हम नए नियम के मार्गदर्शन का पालन करते हैं, तो हमें उत्पत्ति के शुरुआत वाले अध्याय को सिर्फ जो कुछ बहुत पहले घटित हुआ था उसका लेख नहीं पर उससे बढ़कर मानना चाहिए। यह वह तस्वीर भी है जिसमें जो कुछ परमेश्वर ने मसीह के पहले आगमन में किया था, जो कुछ वह दिन ब दिन अभी हमारे जीवनों में कर रहा है, और जो परमेश्वर एक दिन जब मसीह वापस आता है तो परिपूर्णता को लाने के लिए करेगा।

मसीह के राज्य के तीनों चरणों में, परमेश्वर संसार, और हमारे जीवनों में पाप और मृत्यु की अव्यवस्था के खिलाफ आगे बढ़ता है। राज्य के उद्घाटन, निरंतरता, और परिपूर्णता में, वह संसार को उसके आदर्श मंजिल के मार्ग पर स्थापित कर रहा है-यानी अपने लोगों के लिए एक अद्भुत नई सृष्टि।

निष्कर्ष

इस पाठ में हमने चार प्रमुख विचारों को देखा: उत्पत्ति 1-11 का व्यापक उद्देश्य, उत्पत्ति 1:1-2:3 की संरचना और वास्तविक अर्थ, और वे तरीके जिनमें नया नियम सृष्टि की कहानी के विषयों को मसीह और हमारे जीवनों पर लागू करता है। आज के लिए मूसा की सृष्टि वाली कहानी के लिए इस दृष्टिकोण के निहितार्थ कम से कम कहने पर भी आश्चर्यजनक हैं।

आज के समय में रहने वाले मसीहों के रूप में, हमें देखने की जरूरत है कि किस तरह से उत्पत्ति में मूसा के मूल उद्देश्य मसीह में हमारे जीवनों पर लागू होते हैं। उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों को पहली बार सुनने वाले इस्राएलियों के समान ही, हम लोग भी जब इस पापमय संसार में मसीह का पालन करते हैं तो आसानी से निराश हो जाते हैं। लेकिन जिस तरह मूसा ने अपने पाठकों को विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया था कि वे परमेश्वर के आदर्श संसार की ओर मार्ग पर थे, उसी तरह से जब हम मसीह में इस आदर्श संसार की ओर परमेश्वर के अद्भुत मार्ग पर चलते हैं तो हमें भी प्रोत्साहित होना चाहिए।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

Dr. Richard L. Pratt, Jr. (Host) is Co-Founder and President of Third Millennium Ministries. He served as Professor of Old Testament at Reformed Theological Seminary for more than 20 years and was chair of the Old Testament department. An ordained minister, Dr. Pratt travels extensively to evangelize and teach. He studied at Westminster Theological Seminary, received his M.Div. from Union Theological Seminary, and earned his Th.D. in Old Testament Studies from Harvard University. Dr. Pratt is the general editor of the NIV Spirit of the Reformation Study Bible and a translator for the New Living Translation. He has also authored numerous articles and books, including *Pray with Your Eyes Open*, *Every Thought Captive*, *Designed for Dignity*, *He Gave Us Stories*, *Commentary on 1 & 2 Chronicles* and *Commentary on 1 & 2 Corinthians*.